श्रमण १९९२ ०४ (फोल्डर नं. ०२५०१०)

सम्पादक - डॉ. अशोक कुमार सिंह

सह सम्पादक – डॉ. शिवप्रसाद

मुख्य टाइटल

अनुक्रमणिका

गुणस्थान सिद्धान्त का उद्भव एवं विकास – प्रो. सागरमल जैन ---------- १

जैन दर्शन में शब्दार्थ सम्बन्ध – डॉ. सुदर्शन लाल जैन ---------- २७

जालिहरगच्छ का संक्षिप्त इतिहास – डॉ. शिवप्रसाद ---------- ४१

प्राकृत जैनागम परम्परा में गृहस्थाचार तथा उसकी पारिभाषिक शब्दवाली – डॉ. कमलेश जैन ----- ४७

त्रिषष्टिशलाकापुरुष चरित में प्रतिपादित सांस्कृतिक जीवन – डॉ. उमेशचन्द्र श्रीवास्तव ---------- ६९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org